Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

शैक्षणिक पुस्तकालयों की वर्तमान में प्रासंगिकता

शोध–निर्देषक
डॉ. रेखा मर्सकोले
सहायक प्राध्यापक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल
जिला–भोपाल (म.प्र.)

शोधार्थी
सबीहा बेगम
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तावना–

शैक्षणिक पुस्तकालयों की स्थिति एवं ज्ञान तथा सूचनाओं के स्रोत के रूप में पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं की क्रियाशीलता का अध्ययन वर्तमान परिवेश में इसलिए समीचीन है कि शिक्षा में पुस्तकालय में सूचना सुविधाओं की प्रक्रिया किस सीमा तक छात्रों तथा अध्येताओं के लिए सूचना तथा तथ्यों के संग्रहण में उपयोगी सिद्ध हो रही है। सूचना सुविधाओं द्वारा पुस्तकालयीन व्यवस्था के विकास में किस सीमा तक प्रयासरत हैं, इसका विश्लेषण प्रस्तुत शोध के लिए महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक पुस्तकालय सामाजिक एकीकरण और सामुदायिक निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे सुरक्षित और समावेशी स्थानों के रूप में कार्य करते हैं जहाँ विविध सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के व्यक्ति सीखने, बातचीत करने और सहयोग करने के लिए एक साथ आते हैं। बच्चों के लिए कहानी सुनाने के सत्रों, वयस्कों के लिए कौशल–निर्माण कार्यशालाओं और सार्वजनिक चर्चाओं के लिए मंचों के माध्यम से, पुस्तकालय अपनेपन और नागरिक जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देते हैं। ये कार्यक्रम लोगों को विचारों को सांझा करने, सार्थक संवाद में शामिल होने और अपने समुदायों के भीतर संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे सामाजिक पूंजी बढ़ती है। उदाहरण के लिए, वित्तीय साक्षरता या व्यावसायिक प्रशिक्षण पर कार्यशालाओं की मेजबानी करने वाले पुस्तकालय व्यक्तियों को

समुदाय की सांझा भावना को बढ़ावा देते हुए आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

शैक्षणिक पुस्तकालयों की एक और महत्वपूर्ण भूमिका सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण है। पुस्तकालय दुर्लभ पांडुलिपियों, स्थानीय इतिहास, लोक साहित्य और अन्य सांस्कृतिक कलाकृतियों को सुरक्षित रखते हैं जो किसी समुदाय की पहचान और परंपराओं को दर्शाते हैं। इन संसाधनों को सुलभ बनाकर, पुस्तकालय सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने और अंतर–सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक प्रदर्शनियों की मेजबानी करने वाले या स्थानीय कला का जश्न मनाने वाले पुस्तकालय जनता को विभिन्न दृष्टिकोणों से अवगत कराते हुए सांस्कृतिक आख्यानों को संरक्षित करने में योगदान करते हैं।

अतीत को संरक्षित करने और अंतर–सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने की यह दोहरी भूमिका सुनिश्चित करती है कि समावेशी और प्रबुद्ध समाज को बढ़ावा देने में पुस्तकालय अपरिहार्य बने रहें।

पुस्तकालय का परिचय–

पुस्तकालय, चाहे छोटा हो या बड़ा उनकी स्थापना का एकमात्र उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करना है। पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है जो सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुस्तकालय का उद्देश्य सम्भावित उच्चतम सेवाओं को उपलब्ध कराना तथा उपयोगकर्ताओं की सेवा हेतु परिवर्तन के लिए सदैव तत्पर रहना है। 'पुस्तकालय में परिवर्तन लाना चाहिए या नही' इसका निर्णय करने के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष को हमेशा एक प्रश्न करना चाहिए कि इस परिवर्तन से उपभोगता को क्या लाभ है? इससे पुस्तकालय के सामर्थ्य को कैसे बढ़ाया जा सकता है। पुस्तकालय वर्तमान में

Global Insights, Multidisciplinary Excellence

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

उपभोगताओं की कैसे सेवा कर रहा रहा है।'' गुणवत्ता का महत्व अत्यधिक है क्योंकि सही व्यक्ति को सही रूप में सही समय पर सही सूचना प्रदान की जानी चाहिए।

ज्ञान, सूचनाओं एवं विशिष्टीकृत जानकारियों तक पहुँच सुनिश्चित करने तथा तथ्यों का संग्रहण कर ज्ञान के क्षेत्र में नवोन्मेष लाने का महत्वपूर्ण उपादान पुस्तकालय का होता है। आदिकाल से उन्नत एवं समृद्ध पुस्तकालयों की संकल्पना शिक्षा जगत की महत्वपूर्ण ज्ञान की आनुसंगिक संकल्पना थे। यूनान में प्लेटो द्वारा स्थापित अकादमी, अरस्तु द्वारा स्थापित लीसियम ज्ञान के संशाधन के रूप में ख्यातिलब्ध एवं प्रतिष्ठित थे।

वैश्वीकृत व्यवस्था में ज्ञान तथा सूचनाओं के विस्फोट की स्थिति में सूचना सुविधाओं से युक्त पुस्तकालयों की संकल्पना न केवल विकसित अपितु अल्प विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के शैक्षणिक संस्थाओं की अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है।

वैश्वीकृत व्यवस्था में ज्ञान तथा सूचनाओं के विस्फोट की स्थिति में सूचना सुविधाओं से युक्त पुस्तकालयों की संकल्पना न केवल विकसित अपितु अल्प विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के शैक्षणिक संस्थाओं की अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है।

आज के आधुनिक युग में पुस्तकालयों का विस्तार सर्वत्र हो रहा है। इसके विस्तार क्षेत्र देखते हुए इसे कई प्रकारों में बाँटा जाता है। विभिन्न पुस्तकालयों का अपना क्षेत्र और उद्देश्य अलग–अलग होता है और वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुकूल रूप धारण करते हैं।

शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है, जैसे–विश्वविद्यालय पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय, माध्यमिक शाला पुस्तकालय, बेसिक शाला पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं, अनुसन्धान संस्थाओं और खोज संस्थाओं के निजी पुस्तकालय आदि। प्रत्येक विश्वविद्यालय के साथ एक विशाल पुस्तकालय का होना प्रायः अनिवार्य ही है। बेसिक शालाओं एवं जूनियर हाई स्कूलों में तो अभी पुस्तकालयों का विकास नहीं हुआ है, परन्तु माध्यमिक शालाओं एवं विद्यालयों के पुस्तकालयों का सर्वांगीण विकास हो

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

रहा है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालयों के और भी अनेक भेद हैं, जैसे–ध्वनि पुस्तकालय, जिनमें ग्रामोफोन समाचार पुस्तकालय, जेल पुस्तकालय, नेत्रहीनों का पुस्तकालय, संगीत पुस्तकालय, बाल पुस्तकालय एवं सचल पुस्तकालय आदि।

पुस्तकालय का महत्व–

पुस्तकालयों की स्थापना सम्बन्धित संस्थान की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की जाती है। अतः शैक्षिक पुस्तकालयों के कार्य तथा उद्देश्य के पहले शिक्षा, विशेषतः शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा करना आवश्यक है। शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में अनेक स्थानों की चर्चा हुई है। ऑल इण्डिया फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी एण्ड कॉलेज ऑर्गेनाइजेशन्स विल्सन और टाउबर, कर्न एलेक्जेण्डर आदि ने शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में विस्तृत रूप से लिखा है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि शैक्षणिक पुस्तकालय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. छात्रों की कल्पना और विश्लेषणात्मक शक्ति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की शिक्षा देना।
2. कला, विज्ञान तथा वाणिज्य के क्षेत्र में विश्व स्तर पर होने वाले विकास से छात्रों को परिचित कराना।
3. छात्रों में आत्मनिर्भरता का विकास करना।
4. समग्र रूप में ज्ञान की व्याख्या करना।
5. शोध, प्रकाशन तथा शिक्षा का विस्तार करना।

शिक्षा में शैक्षणिक पुस्तकालय का स्थान सर्वोपरि है। पुस्तकालय वह स्थान है, जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, सेवाओं, स्रोतों आदि का संग्रह रहता है। पुस्तकालय शब्द अँग्रेजी के लाइब्रेरी शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। लाइब्रेरी शब्द की उत्पत्ति लैटिन लाइबर से

हुई है, जिसका अर्थ है—पुस्तक पुस्तकालय का इतिहास लेखन प्रणाली, पुस्तकों और दस्तावेज के स्वरूप को संरक्षित रखने की पद्धतियों और प्रणालियों से जुड़ा है। पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—पुस्तक+आलय। जिसमें लेखक के भाव संगृहीत हों, उसे पुस्तक कहा जाता है और आलय का आशय स्थान या घर से होता है। इस प्रकार पुस्तकालय उस स्थान को कहते हैं जहाँ पर अध्ययन सामग्री (पुस्तकें, फिल्म पत्र—पत्रिकाएँ, मानचित्र, हस्तलिखित ग्रन्थ, ग्रामोफोन रिकॉर्ड एवं अन्य पठनीय सामग्री) संगृहीत होती हैं और इन सामग्रियों की सुरक्षा की जाती है। पुस्तकों से भरी अलमारी अथवा पुस्तक विक्रेता के पास पुस्तकों का संग्रह पुस्तकालय नहीं कहलाता है, क्योंकि वहाँ पर पुस्तकों को व्यावसायिक दृष्टि से रखा जाता है।

वर्तमान समय में शैक्षणिक पुस्तकालय संचित पुस्तकों का मात्र कोष—गृह ही नहीं, बल्कि यह सामाजिक जीवन के साथ हर सम्भव सम्बन्ध स्थापित करने वाला बहुसूत्री संस्थान बन गया है, जो नई आवश्यकताओं को अपने साधनों द्वारा पूर्ण करने की युक्ति एवं सामग्रियों से सम्पन्न होता है। आधुनिक पुस्तकालय का कार्य विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा न केवल पाठकों को इच्छित पुस्तकें उपलब्ध कराना है, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में ज्ञान प्राप्ति की आकांक्षा को पैदा करना भी है। आज आधुनिक पुस्तकालय एक शैक्षणिक और सामाजिक केन्द्र बनता जा रहा है। ऐसे पुस्तकालयों काशैक्षणिक पुस्तकालयों की संज्ञा दी गई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) के घोषणा—पत्र में सार्वजनिक पुस्तकालय के अनुसार सार्वजनिक पुस्तकालय जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा संचालित होने वाला ज्ञान भण्डार है। सार्वजनिक पुस्तकालय एक ऐसा निर्बन्ध विश्वविद्यालय है, जहाँ जनता बिना किसी प्रतिबन्ध के ज्ञान प्राप्त करती है। सार्वजनिक पुस्तकालय की सेवाएँ समाज का हर व्यक्ति बिना किसी प्रतिबन्ध के समान रूप से प्राप्त कर सकता है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

आज के आधुनिक युग में पुस्तकालयों का विस्तार सर्वत्र हो रहा है। इसके विस्तार क्षेत्र देखते हुए इसे कई प्रकारों में बाँटा जाता है। विभिन्न पुस्तकालयों का अपना क्षेत्र और उद्देश्य अलग–अलग होता है और वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुकूल रूप धारण करते हैं। इसी के आधार पर इसके अनेक भेद हो जाते हैं, जो निम्नवत् हैं–

शैक्षिक पुस्तकालय–

शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है, जैसे–विश्वविद्यालय पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय, माध्यमिक शाला पुस्तकालय, बेसिक शाला पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं, अनुसन्धान संस्थाओं और खोज संस्थाओं के निजी पुस्तकालय आदि। प्रत्येक विश्वविद्यालय के साथ एक विशाल पुस्तकालय का होना प्रायः अनिवार्य ही है। बेसिक शालाओं एवं जूनियर हाई स्कूलों में तो अभी पुस्तकालयों का विकास नहीं हुआ है, परन्तु माध्यमिक शालाओं एवं विद्यालयों के पुस्तकालयों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालयों के और भी अनेक भेद हैं, जैसे–ध्वनि पुस्तकालय, जिनमें ग्रामोफोन समाचार पुस्तकालय, जेल पुस्तकालय, नेत्रहीनों का पुस्तकालय, संगीत पुस्तकालय, बाल पुस्तकालय एवं सचल पुस्तकालय आदि।

शैक्षिक पुस्तकालय के उद्देश्य–

शैक्षिक पुस्तकालयों की स्थापना सम्बन्धित संस्थान की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की जाती है। अतः शैक्षिक पुस्तकालयों के कार्य तथा उद्देश्य के पहले शिक्षा, विशेषतः उच्च शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में अनेक स्थानों की चचर्चा हुई है। ऑल इण्डिया फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी एण्ड कॉलेज ऑर्गेनाइजेशन्स (AIFUCTO), विल्सन और टाउबर, कर्न एलेक्जेण्डर आदि ने शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में विस्तृत रूप से लिखा है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

1. छात्रों की कल्पना और विश्लेषणात्मक शक्ति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की शिक्षा देना।
2. कला, विज्ञान तथा वाणिज्य के क्षेत्र में विश्व स्तर पर होने वाले विकास से छात्रों को परिचित कराना।
3. छात्रों में आत्मनिर्भरता का विकास करना।
4. समग्र रूप में ज्ञान की व्याख्या करना।
5. शोध, प्रकाशन तथा शिक्षा का विस्तार करना।

शैक्षिक पुस्तकालय के कार्य–

किसी शैक्षिक पुस्तकालय को निम्नलिखित पाँच कार्यों को पूरा करना आवश्यक होता है–

- नई तकनीकों को अपनाकर कम–से–कम समय में पाठकों की आवश्यकता पूरी करना।
- छात्रों, शिक्षकों तथा अन्य सदस्यों को उनकी शिक्षा, शोध तथा पठन–पाठन से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध कराना।
- उपलब्ध कराई सामग्री की गुणवत्ता बनाए रखना जिससे छात्रों की कल्पना और विश्लेषणात्मक शक्ति का विकास है, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों में उनकी आस्था का विकास हो। विश्व और देश में कला, विज्ञान आदि के क्षेत्र में होने वाली प्रगति से परिचित होते रहें जिससे अपनी आगे की पढ़ाई या जीवन को ढालने में उन्हें मदद मिल सके।
- ऐसे उपाय करना जिससे नए छात्रों तथा शिक्षकों की पठन एवं शिक्षण कार्यक्रम में गुणवत्ता लाई जा सके।

- निम्नलिखित रीति से पाठकों की विशेष सेवा करना– (1) जैसे–सन्दर्भ सेवा, करेण्ट अवेयरनेस सेवा (CAS), सेलेक्टिव डेसिमिनेशन ऑफ इन्फॉर्मेशन (SCI) आदि।

राष्ट्रीय पुस्तकालय–

जिस पुस्तकालय का उद्देश्य सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा करना होता है, उसे राष्ट्रीय पुस्तकालय कहते हैं। वहाँ पर हर प्रकार के पाठकों की आवश्यकतानुसार पठन सामग्री का संकलन किया जाता है। अनोंल्ड इस्डैल के अनुसार, ''राष्ट्रीय पुस्तकालय का मुख्य कर्त्तव्य सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रगतिशील विद्यार्थियों को इतिहास और साहित्य की सामग्री सुलभ कराना, अध्यापकों, लेखकों एवं शिक्षितों को शिक्षित करना है।'' प्रसिद्ध भारतीय विद्वान् **डॉ. रंगनाथ** के अनुसार देश की सांस्कृतिक अध्ययन सामग्री की सुरक्षा राष्ट्रीय पुस्तकालय का मुख्य कार्य है साथ ही देश के प्रत्येक नागरिक को ज्ञानार्जन की समान सुविधा प्रदान करना और जनता की शिक्षा में सहायता देने के विविध क्रियाकलापों द्वारा ऐसी भावना भरना कि लोग देश के प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर सकें।

सर्वाजनिक पुस्तकालय–

आधुनिक सार्वजनिक पुस्तकालयों का विकास वास्तव में प्रजातन्त्र की महान् देन है। शिक्षा का प्रसारण एवं जन सामान्य को सुशिक्षित करना प्रत्येक राष्ट्र का कर्तव्य है। जो लोग स्कूलों या कॉलेजों में नहीं पढ़ते, जो साधारण पढ़े लिखे हैं, अपना व्यवसाय अर्थात् निजी व्यवसाय करते हैं अथवा जिनकी पढ़ने की अभिलाषा है और पुस्तकें नहीं खरीद सकते तथा अपनी रूचि का साहित्य पढ़ना चाहते हैं, ऐसे वर्गों की रूचि को ध्यान में रखकर जनसाधारण की पुस्तकों की माँग सार्वजनिक पुस्तकालय ही पूरी कर सकते है। इसके अतिरिक्त प्रदर्शनी, वाद–विवाद, शिक्षाप्रद चलचित्र प्रदर्शन, महत्वपूर्ण विषयों पर भाषण आदि का भी प्रबन्ध सार्वजनिक पुस्तकालय करते हैं।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सार्वजनिक पुस्तकालयों की अवधारणा–

सार्वजनिक पुस्तकालयों की अवधारणा समय के साथ काफी विकसित हुई है, जो पुस्तक भंडार की पारंपरिक छवि से आगे निकल गई है। आज, सार्वजनिक पुस्तकालय गतिशील और समावेशी स्थान हैं जो व्यक्तियों और समुदायों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। वे न केवल पुस्तकों तक पहुँच प्रदान करते हैं, बल्कि डिजिटल सामग्री, शैक्षिक उपकरण और समुदाय–संचालित कार्यक्रमों तक भी पहुँच प्रदान करते हैं। यह परिवर्तन सामाजिक परिवर्तनों के प्रति उनकी अनुकूलनशीलता और शैक्षिक, सूचनात्मक और सामाजिक अंतराल को दूर करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

पुस्तकालय अब आजीवन सीखने के सूत्रधार के रूप में कार्य करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि जीवन के सभी क्षेत्रों के व्यक्तियों के पास अपने बौद्धिक और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधन हों।

सार्वजनिक पुस्तकालय मूल रूप से लोकतंत्र, समानता और समावेशिता के सिद्धांतों में निहित हैं। वे ज्ञान तक मुफ्त और समान पहुँच प्रदान करके समानता लाने वाले के रूप में कार्य करते हैं, जिससे विशेषाधिकार प्राप्त और वंचित समुदायों के बीच की खाई को पाटा जा सकता है। यूनेस्को के पब्लिक लाइब्रेरी मेनिफेस्टो (2016) में सार्वजनिक पुस्तकालयों को ''ज्ञान के लिए स्थानीय प्रवेश द्वार, आजीवन सीखने, स्वतंत्र निर्णय लेने और व्यक्ति तथा सामाजिक समूहों के सांस्कृतिक विकास के लिए एक बुनियादी स्थिति प्रदान करने'' के रूप में सटीक रूप से वर्णित किया गया है। यह कथन व्यक्तियों को सशक्त बनाने और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने में पुस्तकालयों की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करता है।

डिजिटल साक्षरता कार्यशालाओं और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे हाशिए के समूहों की जरूरतों के अनुरूप संसाधन और कार्यक्रम प्रदान करके, पुस्तकालय सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करते हैं और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं।

शैक्षणिक पुस्तकालयों की समावेशी प्रकृति सीखने और ज्ञान प्राप्ति के विविध रूपों को पूरा करने की उनकी क्षमता में भी स्पष्ट है। पुस्तकालय मुद्रित पुस्तकों, डिजिटल अभिलेखागार, ऑडियोबुक और ब्रेल सामग्री सहित कई प्रारूपों में संसाधन प्रदान करते हैं, जो विभिन्न आवश्यकताओं और क्षमताओं वाले व्यक्तियों के लिए पहुँच सुनिश्चित करते हैं। इसके अलावा, पुस्तकालय अक्सर सामुदायिक केंद्रों के रूप में काम करते हैं जो सांस्कृतिक कार्यक्रमों, चर्चा मंचों और कौशल निर्माण कार्यशालाओं की मेजबानी करते हैं। ये पहल व्यक्तियों के बौद्धिक संवर्धन में योगदान करती हैं और समुदाय के भीतर अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालयों का एक और महत्वपूर्ण पहलू सांस्कृतिक संरक्षण में उनकी भूमिका है। पुस्तकालयों में दुर्लभ पांडुलिपियाँ, स्थानीय इतिहास और सांस्कृतिक कलाकृतियाँ होती हैं, जो किसी समुदाय की विरासत और पहचान को समझने के लिए मूल्यवान संसाधनों के रूप में कार्य करती हैं। इन संसाधनों को जनता के लिए सुलभ बनाकर, पुस्तकालय सांस्कृतिक ज्ञान और परंपराओं के अंतर–पीढ़ी संचरण को सुनिश्चित करते हैं।

क्रिसन और इओनेस्कु (2024) इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे सार्वजनिक पुस्तकालय सक्रिय रूप से आयोजनों और प्रदर्शनियों के माध्यम से सांस्कृतिक साक्षरता को बढ़ावा देते हैं, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को और मजबूत करते हैं। यह संरक्षण न केवल वर्तमान को समृद्ध करता है बल्कि भविष्य के बौद्धिक प्रयासों के लिए आधार के रूप में भी कार्य करता है।

डिजिटल युग के संदर्भ में, सार्वजनिक पुस्तकालयों की अवधारणा का विस्तार प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफॉर्म के एकीकरण को शामिल करने के लिए हुआ है। आधुनिक पुस्तकालय ई–पुस्तकों, ऑनलाइन डेटाबेस और डिजिटल मीडिया टूल तक पहुँच प्रदान करते हैं, जिससे उपयोगकर्ता कभी भी और कहीं भी जानकारी तक पहुँच सकते हैं। वे डिजिटल

साक्षरता का प्रशिक्षण भी देते हैं, जो सूचना युग की जटिलताओं को समझने के लिए आवश्यक है। जैसा कि मेहता और वांग (2020) ने उल्लेख किया है, पुस्तकालयों ने प्रासंगिक बने रहने और अपने समुदायों को प्रभावी ढंग से सेवा प्रदान करने के लिए डिजिटल नवाचारों को अपनाया है। इस अनुकूलनशीलता ने पुस्तकालयों को डिजिटल विभाजन को कम करने और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देने में प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में स्थान दिया है।

सार्वजनिक पुस्तकालय पुस्तकों के भंडार से कहीं अधिक हैं, वे जीवंत और समावेशी संस्थान हैं जो व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाते हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और आधुनिक तकनीकों को एकीकृत करने के माध्यम से, पुस्तकालयों ने खुद को शिक्षा, सामाजिक सामंजस्य और सांस्कृतिक समृद्धि के अपरिहार्य एजेंट के रूप में स्थापित किया है। बदलती सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल होने की उनकी क्षमता सभी के लिए ज्ञान और अवसरों तक समान पहुँच को बढ़ावा देने में उनकी निरंतर प्रासंगिकता सुनिश्चित करती है।

अनुसन्धान पुस्तकालय–

उस संस्था को कहते हैं जो ऐसे लोगों की सहायता एवं मार्गदर्शन करती है जो ज्ञान की सीमाओं को विकसित करने में कार्यरत हैं। ज्ञान की विभिन्न शाखाएँ हैं और उनकी पूर्ति विभिन्न प्रकार के संग्रहों से ही सम्भव हो सकती है, जैसे कृषि से सम्बन्धित किसी विषय पर अनुसन्धानात्मक लेख लिखने के लिए कृषि महाविद्यालय या कृषि कार्यों से सम्बन्धित किसी संस्था का ही पुस्तकालय अधिक उपयोग सिद्ध होगा। ऐसे पुस्तकालयों की कार्यपद्धति अन्य पुस्तकालयों से भिन्न होती है। यहाँ कार्य करने वाले कर्मियों का अत्यन्त दक्ष एवं अपने विषय का पण्डित अनिवार्य है, नहीं तो अनुसन्धानकर्ताओं को ठीक मार्गदर्शन उपलब्ध न हो सकेगा।

संग्रह की दृष्टि से भी यहाँ पर बहुत सतर्कतापूर्वक सामग्री का चुनाव करना चाहिए। सन्दर्भ सम्बन्धी प्रश्नों का तत्काल उत्तर देने के लिए पुस्तकालय में विशेष उपादनों का होना

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

और उनका रख–रखाव भी ऐसा चाहिए कि अल्प समय में ही आवश्यक जानकारी सुलभ हो सके। विभिन्न प्रकार की रिपोर्टों और विषय से सम्बन्धित मुख्य पत्रिकाएँ, ग्रन्थसूचियाँ, विश्वकोश, कोश और पत्रिकाओं की फाइलें संगृहीत की जानी चाहिए।

व्यावसायिक पुस्तकालय–

इन पुस्तकालयों का उद्देश्य किसी विशेष व्यावसायिक संस्था अथवा वहाँ के कर्मचारियों की सेवा करना होता है। इनके आवश्यकतानुसार विशेष पठन–सामग्री का इन पुस्तकालयों में संग्रह किया जाता है, जैसे–व्यवसाय से सम्बन्धित डायरेक्टरीज, व्यावसायिक पत्रिकाएँ, समय सारणियाँ महत्वपूर्ण सरकारी प्रकाशन, मानचित्र, व्यवसाय से सम्बन्धित पाठ्य एवं सन्दर्भ ग्रथ, विधि साहित्य इत्यादि।

सरकारी पुस्तकालय–

जैसे तो सरकार अनेक पुस्तकालयों को वित्तीय सहायता देती है, परन्तु जिन पुस्तकालयों का सम्पूर्ण व्यय सरकार वहन करती है, उन्हें सरकारी पुस्तकालय कहते हैं, जैसे–राष्ट्रीय पुस्तकालय, विभागीय पुस्तकालय, विभिन्न मन्त्रालयों के पुस्तकालय, प्रान्तीय पुस्तकालय। संसद और विधानभवनों के पुस्तकालय भी सरकारी पुस्तकालय की श्रेणी में आते हैं।

चिकित्सा पुस्तकालय–

यह पुस्तकालय किसी चिकित्सा सम्बन्धी संस्था, विद्यालय, अनुसन्धान केन्द्र अथवा चिकित्सालय को सम्बद्ध होते हैं। इनमें चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों का संग्रह रहता है और इनका रूप सार्वजनिक न होकर विशेष वर्ग की सेवा मात्र तक ही सीमित होता ळें

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सेवा पुस्तकालय–

ये पुस्तकालय विशिष्ट प्रकार के होते हैं और संग्रह की दृष्टि से इनका रूप प्रायः अन्य पुस्तकालयों से भिन्न होता है। प्रथम विश्वयुद्ध के समय ऐसे पुस्तकालयों की आवश्यकता की ओर ध्यान दिया गया था और द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तो सेना के अधिकारियों को पठन–पाठन की सुविधा देने हेतु मित्र–राष्ट्रों ने अनेकानेक पुस्तकालय स्थापित किए। अकेले अमेरिका में नभ सेना के लिए 1600 पुस्तकालय है जिनमें नभ सेना के उपयोग के लिए नई–से–नई सामग्री का संग्रह किया जाता है।

महत्वपूर्ण पुस्तकालय–

1847 ई. से वर्ष 1900 के मध्य तक 12 एवं वर्ष 1901 से वर्ष 1947 के मध्य तक 8 महत्वपूर्ण पुस्तकालयों की स्थापना हुई। इन पुस्तकालयों के नाम तथा वर्ष 2020 की अनुमानित ग्रन्थों की संख्या निम्नवत है–

सारणी क्रमांक 1

महत्वपूर्ण पुस्तकालयों की स्थापना वर्ष 2011 के अनुसार

स्थापना वर्ष	पुस्तकालय का नाम	वर्ष 2011 में पुस्तकों की लगभग संख्या
1847	त्रिवेन्द्रम सार्वजनिक पुस्तकालय	95,000
1850	करवीर नगर वाचन मंदिर पुस्तकालय	360000
1864	इलाहाबाद सार्वजनिक पुस्तकालय	630000
1867	नीलगिरी पुस्तकालय	74,000
1875	जामिया निजामियत	69,000

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

1891	इम्पीरियल पुस्तकालय	5,00,000
1898	गुथम पुस्तकालय	49,000
1910	केन्द्रीय पुस्तकालय	19,00,000
1914	बंगलौर पुस्तकालय	19,000
1920	जामिया पुस्तकालय	15,00,000
1922	श्रीमती राधिक सिंह पुस्तकालय	78,500
1937	सेठ मानक लाल जेठा पुस्तकालय	86,000

स्रोत–पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, यू.जी.सी., नेट

डिजीटलीकृत स्वरूप में उपलब्ध सूचना संसाधनों की सहभागिता करना या नेटवर्क तकनीक का इस्तेमाल कर पुस्तकालयों द्वारा संसाधनों का आदान–प्रदान करना काफी आसान है। वर्तमान में कई पुस्तकालयों द्वारा आपसी समझौता कर ई–डॉक्यूमेण्ट्स की खरीद की जाती है और उसको सभी पुस्तकालयों द्वारा उपयोग में लाया जाता है।

पुस्तकालय की वर्तमान में प्रासंगिकता–

पुस्तकालय, चाहे छोटा हो या बड़ा उनकी स्थापना का एकमात्र उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करना है। पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है जो सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुस्तकालय का उद्देश्य सम्भावित उच्चतम सेवाओं को उपलब्ध कराना तथा उपयोगकर्ताओं की सेवा हेतु परिवर्तन के लिए सदैव तत्पर रहना है। 'पुस्तकालय में परिवर्तन लाना चाहिए या नही' इसका निर्णय करने के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष को हमेशा एक प्रश्न करना चाहिए कि इस परिवर्तन से उपभोगता को क्या लाभ है? इससे पुस्तकालय के सामर्थ्य को कैसे बढ़ाया जा सकता है। पुस्तकालय वर्तमान में

उपभोगताओं की कैसे सेवा कर रहा रहा है।'' गुणवत्ता का महत्व अत्यधिक है क्योंकि सही व्यक्ति को सही रूप में सही समय पर सही सूचना प्रदान की जानी चाहिए। 'महाविद्यालय के पुस्तकालयों ने प्रयोगकर्ताओं की बढ़ती आवश्यकताओं के अनुसार अपने तरीकों को बदला है या नही' इस समस्या एवं उसके समाधान को जानने के लिए **अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)** करना प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

सूचना संचार और पुस्तकालय का योगदान–

प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास ने शैक्षणिक सेटिंग्स में सूचना तक पहुँचने, संग्रहीत करने और उपयोग करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया है। सूचना संसाधन–इलेक्ट्रॉनिक संसाधन जिसमें ई–पुस्तकें, ई–पत्रिकाएँ, डेटाबेस और डिजिटल रिपॉजिटरी शामिल हैं, दुनिया भर के महाविद्यालय पुस्तकालयों में आवश्यक उपकरण बन गए हैं। ये सूचना संसाधन विशाल, अद्यतित जानकारी प्रदान करते हैं जो अकादमिक शोध, सीखने और पेशेवर विकास का समर्थन करते हैं, जिससे वे आधुनिक शिक्षा में अपरिहार्य हो जाते हैं। सूचना पहुँच की ओर वैश्विक बदलाव के साथ, महाविद्यालय पारंपरिक पुस्तकालय संग्रहों पर सूचना सुविधाओं को प्राथमिकता दे रहे हैं, जिससे छात्रों और शोधकर्ताओं को किसी भी समय और स्थान पर सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँचने में मदद मिलती है।

सूचना सुविधाओं ने सूचना तक त्वरित और सुविधाजनक पहुँच प्रदान करके अकादमिक पुस्तकालयों को बदल दिया है, जो शोध उन्मुख शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। भौतिक पुस्तकालयों की पारंपरिक सीमाएँ–जैसे भौगोलिक सीमाएँ, ग्रंथों की सीमित प्रतियाँ और संचालन के सीमित घंटे सूचना सुविधाओं के माध्यम से कम हो जाती हैं। सूचना सुविधाओं में इस परिवर्तन ने उपलब्ध सामग्रियों की सीमा में विस्तार किया है और विद्वानों के बीच अधिक अंतः विषय सहयोग को बढ़ावा दिया है। अध्ययनों से पता चला है कि

सूचना सुविधा, विशेषकर पत्रिकाओं, डेटाबेस और सम्मेलन की कार्यवाही तक पहुँच प्रदान करके बेहतर अकादमिक प्रदर्शन का समर्थन करते हैं।

महामारी के बाद के युग में सूचना सुविधाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गई है, जहाँ दूरस्थ शिक्षा ने प्रमुखता हासिल कर ली है। उदाहरण के लिए, कोविड–19 महामारी के दौरान, भारत भर के महाविद्यालयों ने सूचना सुविधाओं के उपयोग में वृद्धि की सूचना दी क्योंकि छात्रों और संकाय सदस्यों ने ऑनलाइन शिक्षा को अपनाया।

इस बदलाव ने शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित करने में सूचना संसाधनों के महत्व को रेखांकित किया, कई महाविद्यालयों ने दूरस्थ शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सूचना सुविधाओं को अपनाने में तेजी लाई।

शोध से पता चलता है कि सूचना सुविधाओं न केवल बेहतर पहुँच प्रदान करते हैं बल्कि स्व–निर्देशित शिक्षा को भी बढ़ावा देते हैं, क्योंकि छात्र स्वतंत्र रूप से अपने अध्ययन के क्षेत्रों से संबंधित संसाधनों का पता लगा सकते हैं।

निष्कर्ष–

शैक्षणिक पुस्तकालय समाज के अपरिहार्य स्तंभ हैं, जो शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और सूचनात्मक आवश्यकताओं को संबोधित करने वाली विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करते हैं। वे पुस्तकों के मात्र भण्डार से कहीं अधिक हैं, पुस्तकालय बौद्धिक विकास और पीढ़ियों के बीच ज्ञान के प्रसार के केंद्र हैं। अपने मूल में, शैक्षणिक पुस्तकालय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के अभिलेखागार को बनाए रखते हुए सामूहिक मानव ज्ञान को संरक्षित करते हैं, साथ ही साथ समकालीन संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं जो आबादी की लगातार बदलती जरूरतों को पूरा करते हैं। उदाहरण के लिए, पुस्तकालय पारंपरिक प्रिंट मीडिया, डिजिटल सामग्री और इंटरैक्टिव शिक्षण उपकरणों तक फैले संसाधनों को क्यूरेट करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे तेजी से डिजिटल होती दुनिया में प्रासंगिक बने रहे।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

शैक्षणिक पुस्तकालयों की सबसे परिवर्तनकारी भूमिकाओं में से एक समाज में सूचना की खाई को पाटना है। सूचना के डिजिटलीकरण के साथ, पहुँच में असमानताएँ बढ़ गई हैं, खासकर ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में। पुस्तकालय संसाधनों, साक्षरता कार्यक्रमों और डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण (पिरियालम एट अल., 2019, मेहता और वांग, 2020) तक मुफ्त और समान पहुँच प्रदान करके इन असमानताओं को कम करते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण पुस्तकालय अक्सर इंटरनेट सेवाएँ और सामुदायिक कार्यक्रम प्रदान करते हैं जो वंचित आबादी को सरकारी जानकारी तक पहुँचने, नौकरियों के लिए आवेदन करने और डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में भाग लेने के लिए सशक्त बनाते हैं। सूचना का यह लोकतंत्रीकरण न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है बल्कि सामाजिक सामंजस्य को भी मजबूत करता है।

संदर्भ–

1 सियानेस एट अल, 2022, मार्टजौको, 2021)।

2 सिगारिनी एट अल., 2021, क्रिसन और आयोनेस्कु, 2024

3 ऑडुनसन एट अल., 2019

4 वान मोख्तार एट अल., 2023

5 पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान–मुकेश बोरा एवं उदय भान, अरिहन्त पब्लिकेशन्स, लिमिटेड, मेरठ

6 ग्रन्थालय तथा समाज–श्याम सुन्दर अग्रवाल, आर.बी.एस. पब्लिशर्स, जयपुर

7 ऑडुनसन एट अल., 2019, यूनेस्को, 2016

8 मार्टजौको, 2021, सिगारिनी एट अल, 2021

9 वान मोख्तार एट अल., 2023, पिरियालम एट अल., 2019

10 मणि एट अल., 2019, मियांडा चिटुम्बो एट अल., 2021

11 सियानेस एट अल., 2022, वाल्वरडे–बेरोकोसो एट अल., 2021

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

12 यूनेस्को, 2016, रोमन एट अल., 2020

13 ऑडुनसन एट अल., 2019, मार्टजोको, 2021

14 पिरियालम एट अल., 2019, वान मोख्तार एट अल., 2023

15 यूनेस्को, 2016, वाल्वरडे–बेरोकोसो एट अल., 2021, ऑडुनसन एट अल., 2019

16 विश्वनाथ, सिंग, और बालाघाट, 2024

17 गुप्ता, 2024, अंकमाह एट अल., 2024

18 अंकमाह, गेसी, और एम्पोन्साह, 2024, रोहमियाती एट अल, 2023

19 वीर और पांडा, 2021

20 रहमान, 2021, मलिक और सेठी, 2023

21 चौहान और बाबू, 2023